सर्वनाम

PART→2

(2). **निश्चयवाचक सर्वनाम** — जिन सर्वनाम शब्दों से संज्ञा की निश्चितता का पता चलता है, वह सर्वनाम निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाता है।

विशेष– निश्चयवाचक सर्वनाम में अधिकतर निर्जीव वस्तु का बोध होता है।

उदा०– (1) यह मेरी पुस्तक है। (2) वे मेरी कलमें हैं। (3) यह मेरी गाड़ी है।

⇒ यदि इस सर्वनाम में इसने/इन्होंने/उसने/उन्होंने का प्रयोग किया जाता है, तो वहाँ पर निर्जीव वस्तु का बोध है।

⇒ यह हमारी संस्कृति है, इसने हमें टूटने से बचाया है।

⇒ यह मेरे भाई की पुस्तक है (निश्चयवाचक है)

⇒ इसको संकेतवाचक सर्वनाम भी कहा जाता है।

विशेष

उदा०– (1) यह मेरा घर है। (2) वह मेरा पुराना दोस्त है। (अन्य पु०)

(3). **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** — जो सर्वनाम निश्चित संज्ञा का बोध नहीं कराते हैं, वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

कोई (सजीव)
कुछ (निर्जीव)

उदा०–
(1). कोई बाहर से आवाज लगा रहा है।
(2). सर आपको कोई बुला रहा है।
(3). चाय में कुछ गिर गया।
(4). आज कुछ तो बात है।

(4). **प्रश्नवाचक सर्वनाम** — जिन सर्वनाम शब्दों से अपनी संज्ञा के बारे में प्रश्न किया जाता है।

जैसे → (कौन, क्या, किसका)

उदा०- (1) यह कौन-सी पुस्तक है ?
(2) यह रचना किस लेखक ने लिखी है?
(3) तुमने यह फोन कहाँ से खरीदा है?
(4) वह कौन है? जो तुमसे मिलने आया था?
(5) तुम्हारा क्या नाम है?
(6) यह लेखक कौन है?

(5). सम्बंधवाचक सर्वनाम

जो सर्वनाम शब्द आपस में संबंध बताने का कार्य करते हैं, वे शब्द संबंध वाचक सर्वनाम कहलाते हैं—

जैसे — जो, सो, वह, वे, जिसकी, उसकी, जैसा/वैसा जिन, उन, उन्हें आदि

उदा०- (1) जो लोग परिश्रमी नहीं होते हैं, वे लोग कभी भी सफलता प्राप्त नहीं कर पाते हैं।
(2) जो जीतेगा, वही सिकंदर
(3) जो सोता है, सो खोता है।
(4) जिसकी लाठी, उसकी भैंस
(5) जैसी करनी वैसी भरनी।

(6). निजवाचक सर्वनाम

जो सर्वनाम शब्द कर्त्ता से निजत्व यानी पूरी तरह जुड़े होते हैं, वे शब्द निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे → स्वंय, खुद, अपने-आप, आप आदि।

उदा० (1) हमें अपना काम खुद करना चाहिए।
(2) किसान अपने खेत की देखभाल अपने आप करता है।
(3) हमें अपने-आप पर निर्भर रहना चाहिए।
(4) आपको अपना काम आप ही करना चाहिए।
(5) मैं अपनी कहानी स्वंय लिखूँगा—

आप यहाँ बैठिए। (पुरुषवाचक)
आप मुझसे बड़े हैं (पु०वाचक)
आप कितने मासूम हैं। (पु०वाचक)